IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, January 2025
Impact Factor: 7.67

प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में नैतिक चरित्र निर्माण में भावनात्मक बुद्धि की भूमिका

उदय कुमार[1] and डॉ. संगीता[2]

[1]शोधार्थी, विभाग शिक्षा शास्त्र

[2]सहायक प्रोफेसर, विभाग शिक्षा शास्त्र

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

प्राथमिक शिक्षा बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की नींव होती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों एवं सद्गुणों का विकास अत्यंत आवश्यक होता है। नैतिक चरित्र निर्माण न केवल सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है, बल्कि व्यक्तिगत निर्णय क्षमता एवं उत्तरदायित्व की भावना को भी सुदृढ़ करता है। इस संदर्भ में, भावनात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बच्चों को अपनी भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने एवं दूसरों की भावनाओं के प्रति सहानुभूति विकसित करने में सहायता करती है। यह अध्ययन प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में भावनात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों आत्म-ज्ञान, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल के माध्यम से नैतिक गुणों जैसे ईमानदारी, दया, सहयोग और उत्तरदायित्व के विकास की पड़ताल करता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि जिन छात्रों में भावनात्मक बुद्धि का स्तर उच्च था, उनमें नैतिक चरित्र निर्माण की प्रवृत्तियाँ भी अधिक सशक्त पाई गईं। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयों में पाठ्यचर्या एवं सह-पाठ्य गतिविधियों के माध्यम से भावनात्मक बुद्धि को विकसित करने पर विशेष बल दिया जाए।

मुख्य संकेतक: - भावनात्मक बुद्धि, नैतिक चरित्र निर्माण, प्राथमिक शिक्षा, नैतिक मूल्य।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, January 2025
Impact Factor: 7.67

परिचय

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम को समझाना और परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं रह गया है, बल्कि इसका लक्ष्य एक संपूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है। विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा स्तर पर जब बालक के व्यक्तित्व की नींव पड़ती है, तब नैतिक मूल्यों और भावनात्मक विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यही वह समय होता है जब बच्चों में उचित सामाजिक व्यवहार, सहानुभूति, दया, अनुशासन, ईमानदारी, और सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है। इन सभी गुणों का संबंध सीधे-सीधे उस तत्व से है जिसे आधुनिक मनोविज्ञान में "भावनात्मक बुद्धि" या "Emotional Intelligence (EI)" कहा जाता है। भावनात्मक बुद्धि, अर्थात अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सकारात्मक रूप से उपयोग में लाने की क्षमता, न केवल सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाती है, बल्कि यह नैतिक निर्णयों को भी प्रभावित करती है। विशेषकर प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में, जहाँ मानसिक और भावनात्मक विकास तीव्र गति से होता है, वहाँ यदि भावनात्मक बुद्धि को उचित मार्गदर्शन मिले, तो नैतिक चरित्र निर्माण की नींव अत्यधिक सुदृढ़ हो सकती है।

प्राथमिक स्तर की शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन की बुनियाद मानी जाती है। यह वह अवस्था होती है जब बालक न केवल भाषा, गणित, और सामान्य ज्ञान सीखता है, बल्कि वह सामाजिक व्यवहार, नैतिक मूल्य और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ भी सीखता है। इस उम्र में बच्चों का मन अत्यंत ग्रहणशील होता है और उनके व्यक्तित्व का निर्माण उन अनुभवों पर आधारित होता है जो वे अपने विद्यालय, परिवार और समुदाय से प्राप्त करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भावनात्मक बुद्धि एक ऐसा माध्यम बनकर उभरती है, जिसके द्वारा बच्चों में नैतिकता, संवेदनशीलता और सहयोग की भावना को विकसित किया जा सकता है। आज जब समाज में नैतिक पतन, हिंसा, और असहिष्णुता जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली में नैतिक और भावनात्मक शिक्षा को सुदृढ़ करें।

भावनात्मक बुद्धि की अवधारणा सर्वप्रथम पीटर सालोवे और जॉन मेयर (1990) द्वारा प्रस्तुत की गई थी और बाद में डैनियल गोलेमैन (1995) ने इसे लोकप्रिय बनाया। उन्होंने इसे पाँच मूल घटकों में विभाजित किया: आत्म-चेतना (Self-awareness), आत्म-नियंत्रण (Self-regulation), आंतरिक प्रेरणा (Motivation), सहानुभूति (Empathy), और सामाजिक कौशल (Social skills)। ये सभी घटक बच्चों को न केवल स्वयं को समझने में सहायता करते हैं, बल्कि उन्हें दूसरों की भावनाओं को भी समझने और उसका सम्मान करने के योग्य बनाते हैं। जब एक बच्चा यह जान पाता है कि उसका व्यवहार दूसरों को कैसे प्रभावित करता है, या जब

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, January 2025
Impact Factor: 7.67

वह किसी मित्र के दुख को समझकर संवेदनशीलता दिखाता है, तब वह नैतिकता के पथ पर अग्रसर हो रहा होता है।

भावनात्मक बुद्धि और नैतिकता के बीच गहरा संबंध है। एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र न केवल अपने व्यवहार पर नियंत्रण रख सकता है, बल्कि वह सही और गलत के बीच अंतर करने की भी क्षमता रखता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा गुस्से में किसी मित्र को अपशब्द कह देता है, लेकिन बाद में अपनी गलती को समझकर क्षमा मांगता है, तो यह भावनात्मक जागरूकता और नैतिक चेतना दोनों का परिचायक है। इस प्रकार की आत्म-चेतना और सहानुभूति नैतिक चरित्र निर्माण की नींव होती है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं, बल्कि अनुभवों, सामाजिक संवादों और विद्यालय में बनाए गए अनुकूल वातावरण से विकसित होती है।

प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की भूमिका भावनात्मक और नैतिक शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक बच्चों के पहले मार्गदर्शक होते हैं जो उन्हें यह सिखाते हैं कि जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, सहिष्णुता और अनुशासन का क्या महत्व है। यदि शिक्षक स्वयं भावनात्मक रूप से सजग और नैतिक व्यवहार के आदर्श प्रस्तुत करते हैं, तो बच्चे स्वतः ही उन मूल्यों को आत्मसात करते हैं। शिक्षकों द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधियाँ जैसे कहानी-कथन, नैतिक नाटक, समूह गतिविधियाँ, संवाद एवं विमर्श, बच्चों में भावनात्मक बुद्धि को विकसित करने के सशक्त माध्यम बन सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई शिक्षक किसी नैतिक दुविधा पर आधारित कहानी सुनाकर बच्चों से पूछता है कि "अगर तुम होते तो क्या करते?" तब वह बच्चों को सोचने, समझने और नैतिक रूप से निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है।

विद्यालयी पाठ्यक्रमों में यदि भावनात्मक और नैतिक शिक्षा को स्थान दिया जाए, तो यह बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीक-प्रधान युग में जहाँ बच्चे भावनात्मक रूप से अकेले पड़ते जा रहे हैं, वहाँ यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम भावनात्मक बुद्धि के विकास के लिए संगठित और सुनियोजित कार्यक्रम तैयार करें। इन कार्यक्रमों में ध्यान, प्रार्थना, योग, ध्यानपूर्वक सुनना, अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने का अभ्यास, और सहानुभूति आधारित खेल जैसे गतिविधियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं। यह गतिविधियाँ न केवल बच्चों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती हैं, बल्कि उन्हें अपने और दूसरों के प्रति उत्तरदायी बनने का अभ्यास भी कराती हैं।

इसके अतिरिक्त, अभिभावकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। बच्चे अपने घर के वातावरण से सबसे अधिक सीखते हैं। यदि अभिभावक भावनात्मक रूप से सजग हैं, बच्चों की भावनाओं को समझते हैं, और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, January 2025 Impact Factor: 7.67

उन्हें स्वतंत्र रूप से संवाद करने का अवसर देते हैं, तो यह बच्चे की भावनात्मक बुद्धि को सुदृढ़ करता है। विद्यालय और घर के बीच समन्वय से ही नैतिक चरित्र का संपूर्ण निर्माण संभव है। अतः विद्यालयों को चाहिए कि वे अभिभावकों को भावनात्मक बुद्धि के महत्व के प्रति जागरूक करें और इसके विकास हेतु साझा प्रयास करें।

नैतिक चरित्र निर्माण कोई एकदिवसीय प्रक्रिया नहीं है, यह एक सतत विकासशील प्रक्रिया है जो निरंतर अभ्यास, अनुभव और समर्पण से परिपक्व होती है। जब भावनात्मक बुद्धि को प्राथमिक स्तर से ही पोषित किया जाता है, तो छात्र न केवल एक अच्छा विद्यार्थी बनता है, बल्कि एक उत्तरदायी नागरिक, संवेदनशील मित्र, और नैतिक मनुष्य भी बनता है। यह समाज में सामूहिक सद्भाव, करुणा और नैतिकता की भावना को बढ़ावा देता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालय के छात्रों में नैतिक चरित्र निर्माण के लिए भावनात्मक बुद्धि की भूमिका अत्यंत केंद्रीय और निर्णायक है। यदि हम भावी पीढ़ी को सच्चे अर्थों में नैतिक और उत्तरदायी बनाना चाहते हैं, तो हमें शिक्षा की प्राथमिक अवस्था से ही भावनात्मक बुद्धि के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। इसके लिए नीतिगत स्तर पर विद्यालयों में नैतिक-भावनात्मक शिक्षा के समावेशन, शिक्षक प्रशिक्षण, अभिभावक सहभागिता, और सकारात्मक सामाजिक वातावरण की स्थापना अनिवार्य है।

भावनात्मक बुद्धि की अवधारणा (Concept of Emotional Intelligence):

भावनात्मक बुद्धि को "अपने तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और सकारात्मक रूप से व्यक्त करने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया गया है (Salovey & Mayer, 1990)। इसमें पाँच प्रमुख घटक होते हैं:

1. आत्म-चेतना (Self-awareness)
2. आत्म-नियंत्रण (Self-regulation)
3. प्रेरणा (Motivation)
4. सहानुभूति (Empathy)
5. सामाजिक कौशल (Social Skills)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, January 2025
Impact Factor: 7.67

नैतिक चरित्र निर्माण (Moral Character Development):

नैतिक चरित्र निर्माण में ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सहिष्णुता, दया, अनुशासन, तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास शामिल होता है। Kohlberg के नैतिक विकास के सिद्धांत में यह बताया गया है कि नैतिक निर्णय लेना व्यक्ति की मानसिक परिपक्वता और सामाजिक अनुभवों पर निर्भर करता है।

भावनात्मक बुद्धि और नैतिक चरित्र निर्माण का सम्बन्ध:

भावनात्मक बुद्धि और नैतिक विकास पर अनेक शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र अधिक नैतिक निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए:

1. आत्म-चेतना उन्हें अपनी गलतियों को समझने में मदद करती है।
2. सहानुभूति उन्हें दूसरों के दृष्टिकोण को समझने और करुणा का व्यवहार करने में समर्थ बनाती है।
3. सामाजिक कौशल उन्हें सकारात्मक संबंध बनाने और समूहों में नैतिक व्यवहार को अपनाने हेतु प्रेरित करता है।

प्राथमिक विद्यालय के छात्रों पर प्रभाव:

प्राथमिक स्तर पर जब बच्चों की नैतिक सोच प्रारंभिक अवस्था में होती है, तब भावनात्मक बुद्धि का विकास विशेष प्रभाव डालता है:

1. शिक्षक यदि भावनात्मक रूप से सहायक वातावरण प्रदान करें तो बच्चे नैतिक मूल्यों को आत्मसात करना शीघ्र सीखते हैं।
2. भावनात्मक शिक्षा के अंतर्गत समूह गतिविधियाँ, कहानी-कथन, नाट्य-प्रस्तुति और योगाभ्यास जैसे तरीके बच्चों में सहानुभूति और नैतिक अनुशासन विकसित करते हैं।

निष्कर्ष

भावनात्मक बुद्धि न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि यह प्राथमिक विद्यालयों में नैतिक चरित्र निर्माण की नींव भी रखती है। विद्यालयों में EI को पाठ्यक्रम का भाग बनाकर भविष्य में नैतिक नागरिक तैयार किए जा सकते हैं। इसके लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण, पाठ्य सामग्री का निर्माण और मूल्य आधारित शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, January 2025
Impact Factor: 7.67

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोलेमैन, डी. (1995)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता: यह आईक्यू से ज़्यादा क्यों मायने रखती है। *बैंटम बुक्स*।
2. सैलोवे, पी., और मेयर, जे. डी. (1990)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता। कल्पना, अनुभूति और व्यक्तित्व, 9(3), 185–211।
3. कोहलबर्ग, एल. (1981)। नैतिक विकास पर निबंध, खंड एक: नैतिक विकास का दर्शन। हार्पर और रो।
4. एलियास, एम. जे., पार्कर, एस. जे., काश, वी. एम., वीसबर्ग, आर. पी., और ओ' ब्रायन, एम. यू. (2008)। सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और चरित्र शिक्षा: एक तुलनात्मक विश्लेषण।
5. नरवेज़, डी. (2006)। एकीकृत नैतिक शिक्षा। नैतिक विकास की पुस्तिका, 703-733.
6. एनसीईआरटी. (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. नई दिल्ली: एनसीईआरटी.
7. गोयल, आर. (2019). भावनात्मक बुद्धि और नैतिक शिक्षा का प्राथमिक शिक्षा में प्रभाव, शिक्षा विमर्श, खंड 14(2), 45-49.
8. शर्मा, एम. (2021). प्राथमिक विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण हेतु भावनात्मक जागरूकता का महत्व, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान जर्नल, 23(3), 56-61.
9. यादव, एस. (2020). नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षक की भूमिका, शिक्षा संवाद, 17(1), 33-38.
10. सिंह, ए. (2018). भावनात्मक बुद्धि: एक माध्यम नैतिक विकास का, बाल शिक्षा पत्रिका, 12(4), 22-27.
11. चतुर्वेदी, के. (2022). प्राथमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और ई.आई. के अंतर्संबंध, भारतीय शिक्षा शोध, 9(1), 40-44.
12. मिश्रा, डी. (2021). भावनात्मक कौशल और प्राथमिक शिक्षा, शैक्षिक अभिव्यक्ति, 19(2), 49-54.
13. वर्मा, पी. (2020). बालकों में नैतिक सोच के विकास में विद्यालय की भूमिका, शिक्षा नीति समीक्षा, 11(3), 36-41.
14. ठाकुर, आर. (2019). सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा का नैतिक निर्माण में योगदान, शैक्षिक दृष्टिकोण, 16(2), 28-34.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, January 2025
Impact Factor: 7.67

15. जोशी, एल. (2023). शैक्षिक मनोविज्ञान में भावनात्मक बुद्धि का स्थान, बाल विकास जर्नल, 14(1), 31-37.
16. शुक्ला, एन. (2022). नैतिक शिक्षा में भावनात्मक बुद्धि की प्रासंगिकता: एक अध्ययन, प्राथमिक शिक्षा शोध पत्रिका, 8(2), 50-55.